प्रथम अध्याय

विष्णु प्रभाकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व

विष्णु प्रभाकर व्यक्तित्व एवं कृतित्व --

भूमिका --

हिन्दी साहित्य में विष्णु प्रभाकर जी का नाम-स्थान बहुत ऊँचा है। वे बहुमुखी प्रतिभा लेकर हिन्दी साहित्य में अवतीर्ण हुए। वे बरसों से बडी लगन से साहित्य साधना कर रहे हैं। बडी कुशलता से उन्होंने एक साथ कहानी, नाटक एकांकी, उपन्यास, संस्मरण, जीवनी, रेखाचित्र तथा बाल साहित्य को आत्मसात किया है। मानो, साहित्य ही उनका जीवन है। वे साक्षात निष्णात कर्म योगी हैं वे अनोखी अदा एवं बडी लगन से साहित्य साधना कर रहे हैं। ऐसे सृजनशील साहित्यकार पर हिन्दी साहित्य को बडा नाज है। लेकिन बडे अफसोस की बात यह है कि ऐसे श्रेष्ठ साहित्यकार की ओर हिन्दी के आलोचकोंने पर्याप्त ध्यान नहीं दिया।

हिन्दी साहित्यकारों में उनका अपना एक अलग विशिष्ट स्थान है। प्रभाकर जी लब्ध प्रतिष्ठित कहानीकार, प्रख्यात उपन्यासकार एवं रंगमंचीय एकांकीकार एवं नाटककार हैं। बाल साहित्यकार के रूप में भी उन्होंने अनगिनत दिलचस्प कहानियाँ तथा एकांकियों को सफलता से लिखा है। ऐसा लगता है कि उनका साहित्य मानों उनकी जिन्दगी का प्रतिबिम्ब है। साहित्य में दिखाई देनेवाले विष्णु जी अपनी असली जिन्दगी में हूबहू वैसे ही हैं। वे इन्सानियत के जिन्दा मिसाल हैं। मानवता एवं संवेदनशीलता उनमें कूट-कूट भरी हुयी है। उनका व्यक्तित्व अनोखा है, पुरानी पीढी के लोग उन्हें नया समझते हैं, तो नयी पीढीवाले उन्हें पुराना मानते हैं। विष्णु जी सन १९३६ में साहित्यिक क्षेत्र में आये। नये कृतिकारों का नेतृत्व वे आज भी कर रहें हैं। आस्था और विश्वास के जो प्रखर स्वर उनमें है, वैसे अन्य साहित्यकारों में कम ही दिखायी देते हैं। विष्णु जी नये और पुरानी पीढी के बीच खडे हैं। उनके साहित्य में तथा जीवन में नये तथा पुराने

विचारोंका सामंजस्य प्रस्थापित हुआ है। इस पीढीवादी साहित्यिक मान्यता की सिर्फ एक मात्र केज़ुएल्टी हिन्दी में विष्णु प्रभाकर जी हैं। [1]

विष्णु प्रभाकर जी के साथ डॉ.वीरेन्द्र सक्सेना जी ने २४० घण्टे गुजारे थे। वे उन्हें आवारा मनुष्य समझाते हैं। उनके बारे में डॉ.वीरेन्द्र सक्सेना लिखते हैं," मैंने प्रेमचन्द जी को नहीं देखा, मैंने शरच्चंद्र को नहीं देखा, लेकिन उन दोनों के साहित्यिक, उत्तराधिकारी विष्णु प्रभाकर को देख रहा हूँ।"[१] गोपाल कृष्ण कौल उन्हें धुमक्कड मन के धनी मानते हुए कहते हैं," आज कल प्रतिष्ठा की होड में जुटे लेखकों में यदि किसी लेखक में मित्रभाव और मानवीय समन्वय के गुण सहज रूप में दिखाई पडते हों तो वह लेखक निश्चय ही सामान्य से भिन्न है। विष्णु जी भी ऐसे ही लेखक हैं। उनके इन सहज गुणों के कारण उनमें मनुष्य को समग्र दृष्टि से परखने की क्षामता है। चाहे विष्णु जी के नाटक हों,या कहानियाँ,उपन्यास हों या निबन्ध एवं उनकी अन्य रचनाएँ सभी में समग्र दृष्टि से मनुष्य को उद्घाटित करने का प्रयत्न है।"[२] हिन्दी कहानी में उनका विशिष्ट स्थान है। मानवता यह विष्णु जी का प्रधान गुण है। यह मानवता आकाश व्यापी न होकर इस धरती पर स्थिर रहने वाली शाश्वत सत्य की सुन्दर मूर्ति है। इसी कारण विष्णुजी व्यक्ति की अपेक्षा समाज पर जोर देते हैं। एक व्यक्ति के सुख-दु:ख की अपेक्षा पूरे समाज का ध्यान अपने साहित्य में रखते हैं।

जन्म तथा परिवार --

विष्णु प्रभाकर जी का जन्म २० जुलाई १९१२ को मीरापुर,जिला मुजफ्फर नगर उत्तर प्रदेश में हुआ। सरकारी कागजों में उनकी जन्मतिथि २१ जून १९१२ दर्ज की गयी है। विष्णुजी के प्रपिता का नाम चिरंजीलाल था। उनके पिताजी का नाम दुर्गाप्रसाद और माता का नाम महादेवी था। उनके बडे भाई का नाम ब्रह्मानंद और छोटे भाई का नाम महेश है। मानो एक ही घर में ब्रह्मा,विष्णु, महेश अवतरित हुए हैं। विष्णु जी के पिता बडे धार्मिक प्रवृत्ति के व्यक्ति थे। सवेरे तीन बजे उठते और दस बजे तक पूजा पाठ में लगे रहते थे। उनकी माताजी

जितनी सुन्दर थी उतनी ही कर्मठ थी । वह ऊर्दू ,हिन्दी लिखना,पढना जानती थी । माता पिताजी ने अपने बच्चों पर अच्छे संस्कार किए । उनके जीवन निर्माण में उनके मामा और माँ का योगदान न भूलने योग्य है । उनकी माँ का अरमान था कि बेटा कुछ बने इसलिए उनको अपने से दूर रखा गया । मगर वह विष्णु जी को शिक्षा के लिए मामा के पास नहीं भेजती तो आज जो विष्णु जी हैं वे कभी नहीं होते । १२ वर्ष की आयु तक उनका बचपना बडे लाड प्यार में बीता । विष्णु जी लिखते हैं,माँ कहा करती थी कि बचपन में मुझे पढने का बहुत चाव था । इस क्षेत्र में स्वयं वही मेरी आदि गुरू थी । वह अपने मायके से दहेज में पुस्तकों का एक बक्स भी लाई थी । उन्हीं को फाड फाडकर मेरे बालक मन में छापे के अक्षरों के प्रति पूजा की सीमा तक मोह पैदा होगया था । सोचा करता था कौन बनाता है, इन्हें, कैसे बनाता है ?" [3]

विष्णु जी ने अपने बचपन के बारह साल अपनी माँ के साये में बिताएँ । उनके पिताजी की एक छोटीसी तमाखू की दूकान थी और दूकान में एक टोकरे में किताबें भरी थीं । अक्षर ज्ञान होने के पश्चात इसी टोकरे के पास बैठ कर विष्णुजी अध्ययन करते थे । ज्ञान की लालसा दिन दूनी रात चौगुनी बढती गयी । गाँव में शिक्षा का प्रबन्ध बहुत कम था । माँ ने बडे अरमान से विष्णु जी को मामा के पास हिसार में भेज दिया । वह किस्सा बताते समय विष्णु जी लिखते हैं," मुझे आगे पढने के लिए गाँव छोडकर जाना पडा । आँखों में आँसू भरकर स्वयं मेरी माँ ने यह कहते हुए हम दोनों भाईयों को अपने से दूर कर दिया था कि राम-लक्ष्मण को बनवास दे रही हूँ जिससे वे कुछ बन सकें ।" [4]

विष्णु जी के मामा क्लर्क थे । वे आर्य समाज के कट्टर अनुयायी थे । मामा के घर में बहुत किताबें थीं ,मानो किताबों का भण्डार ही था । उनका प्यासा मन ज्ञान सागर में डुबकियाँ लगाने लगा । पहले विष्णु जी अन्धविश्वासी थे । लेकिन जिन्दगी के हसीन मोड पर किस्मत ने अंगडाई ली । उनका मन परिवर्तन हुआ और वे आर्य समाजी बने । उन दिनों एक महत्वपूर्ण घटना घटित हुयी,जिसने विष्णुजी का व्यक्तित्व बनाने में सहायता की । घटना यह है कि सन १९२० में काँग्रेसी सभा में एक मासूम बच्चे ने अपनी प्यारी भाषा में कहा था," मैं खद्दर

पहनता हूँ। मेरी प्रार्थना है आप भी खद्दर पहनें। हिन्दू - मुसलमान मिलकर लड़ें अँग्रेजोंसे। " तब मुझे मेरे चाचाने कहा था," देख बे, एक वह लड़का है एक तू है " कैसा अच्छा बोलता है।"[५] इस घटना से उन की जिन्दगी बदल गयी। उसी पल उन्होंने कसम खायी थी कि वे मरते दम तक खद्दर पहनेंगे। अब करीबन साठ साल हुए खद्दर उनके जिस्मसे अब भी चिपका है।

शिक्षा --

विष्णु प्रभाकर जी की बचपन की शिक्षा मीरापुर में हुयी। गाँव में शिक्षा का उचित प्रबन्ध नहीं था इसलिए उनके मामा उन्हें हिसार लेकर गये। नियमित रूप से दसवीं कक्षा तक आपने शिक्षा प्राप्त की। आर्थिक एवं पारिवारिक परिस्थिति की वजह से वे कॉलेज नहीं जा सके। पंजाब विश्वविद्यालय की इंटर और बी.ए.परीक्षा उन्होंने बाहर से बैठकर पास की। हिन्दी में 'प्रभाकर' तथा संस्कृत में 'विशारद' परीक्षाएँ उत्तीर्ण की। माँ से जुदा होकर शिक्षा प्राप्त करने के लिए उन्हें मामा के पास जाना पडा। वे माँ के प्रेम से वंचित हो गए। उनका दुर्बल मन माँ के स्नेह के अभाव में तीव्र हीन भावना का शिकार हो गया। जब माँ के प्यार की छाया भी दूर हो गयी तो आन्तरिक दुर्बलताओं ने उन्हें ग्रस लिया। वे अन्तर्मुखी बन गये। मनुष्य की छाया से वे मानो डरने लगे। विष्णु जी पढने लिखने में क्लास में हमेशा आगे रहते। विशेषकर हिन्दी, इतिहास, संस्कृत और धर्मशिक्षा में। इसी कारण स्कूल की सभाओं में भी हमेशा आगे रहते। इन सब के पीछे उनके मामा की प्रेरणा थी। मामा हर पल भावुक विष्णु जी के दिल एवं भावनाओं का हर पल खयाल रखते। 'हिसार' के 'दन्दुलाल एंग्लो वैदिक हायस्कूल' से उन्होंने सन १९२९ में द्वितीय श्रेणी में मॅट्रीक परीक्षा पास की।

नौकरी --

विष्णु जी हालात की वजह से ऊँची शिक्षा प्राप्त करने के लिए कॉलेज जा न पाये। उन्हें मजबूरी से नौकरी करनी पडी। मामा के गाँव हिसार में सरकारी

कैटल फॅार्म पर अठारह रू.माहवार पर पहली नौकरी शुरु की । मई १९२९ से जून १९४४ तक गवर्न मैंट कैटल फॅार्म पर पहले दफ्तरी,फिर क्लार्क के रूप में काम करते रहे । और कुछ दिनों के बाद अटारह से चालीस रु.तनख्वाह मिलती थी । ब्रिटिश सरकार के प्रति उनके मन में सख्त नफरत थी उन्हें यह नौकरी पसन्द नहीं थी । लेकिन मजबूरी से यह नौकरी करनी पडी । राजनीतिक गतिविरोधियों से जुडे रहने के कारण उन्हें पुलिस की निगरानी में रहना पडा । ६ जून १९४० को सारे पंजाब में छापे पडे । सुरकारी नौकर होने के बावजूद भी उनके घर की तलाशी ली गयी । विष्णु जी को गिरफ्तार किया गया । लेकिन तलाशियाँ लेने के बाद कुछ भी आपत्ति जनक सामग्री न मिलने के कारण उन्हें पुलिस ने पंजाब छोड देने का मौखिक आदेश दिया । सन १९४२ में फिर हिन्दू विश्वविद्यालय,बनारस में तोड फोड हो गयी । उन्हीं तारीखों में वे लाहौर में बी.ए.की परीक्षा दे रहे थे । वे विद्रोही ही बने । उन्होंने जून १९४४ में १५ वर्षों की नौकरी से त्यागपत्र देकर हमेशा के लिए पंजाब छोड दिया । वे दिल्ली आ गये । अपने छः भाईयों के परिवार में रहने लगे । दिल्ली में अगस्त १९४४ से ३१ मार्च १९४६ तक उन्होंने `अखिल भारतीय आयुर्वेद महामण्डल' में `एकाउण्टेंट' के पद पर काम किया । बाद में त्याग पत्र देकर स्वतंत्र रुप से लेखन कार्य करने लगे । सितम्बर १९५५ से ३१ मार्च १९५७ तक सरकार के निमंत्रण पर आकाशवाणी के दिल्ली केन्द्र पर `नाटक निर्देशक' के पद पर काम किया ।`त्रिकोण' नामक नया कार्यक्रम शुरु किया ।`आँखों देखी घटना' और `प्रत्यक्ष मुलाकात' आदि कार्यक्रमों के द्वारा रेडियो को स्टुडिओ से बाहर निकालने का आपने प्रयास किया । महात्मा गाँधी हत्या काण्ड में माँह तक फँसे रहे । उन पर याने विष्णु जी पर लगाया हुआ इल्जाम झूठा प्रमाणित हुआ । सन १९५० तक अखिल भारतीय काँग्रेस से विष्णु जी जुडे रहे । लेकिन कुछ समय में ही वे वहाँ से दूर हो गये । नौकरी छोडने के बाद साहित्य सेवा को पूरी तरह से उन्होंने अपना किया । स्वतंत्र रूप से विष्णु जी लेखन कार्य करने लगे ।

विवाह --

विष्णु प्रभाकर जी का विवाह २६ वर्ष की आयु में सन २० मई १९३८ में हरिद्वार की सुश्री सुशीला से हुआ । धार्मिक तथा सामाजिक दृष्टि से उनका विवाह देर से हो गया । वास्तव में विष्णु जी आन्तर जातीय विवाह करना चाहते थे । एक पंजाबी युवती के साथ उनका स्नेह भी था । लेकिन माँ की कर्मठता के कारण वे अपनी मर्जी के अनुसार विवाह नहीं कर सके । सुशीला जी को पहले से ही गाने,बजाने में दिल-चस्पी थी । वह ममतामयी नारी थी । परिवार का बोझ संभालते हुए उन्होंने ट्रेनिंग की परीक्षा पास की । वह रेडियो पर वार्तालाप भी देती थी । कैन्सर की बीमारी को झेलते हुए वह फिर भी हमेशा मुस्कराती थी । स्वभावसे अत्यन्त मृदु भाषी,मिलनसार,व्यवहार कुशल नारी थी । विष्णुजी को वह निरन्तर आगे बढने की प्रेरणा देती थी । प्रौढ शिक्षा के लिए सुशीला प्रभाकर को पुरस्कार भी मिला । ८ जनवरी १९९० को साठ साल की आयु में वह परलोक सिधारी । उनको दो पुत्र और दो पुत्रियाँ हैं । उनके नाम अनीता,अतुल, अमित और अर्चना हैं । सब सुशिक्षित एवं विवाहित अत: कार्यरत भी हैं। उनकी साहित्य यात्रा में सबसे बडा हाथ उनको धर्म पत्नी का है । वह विष्णुजी को प्रेरणा दामिनी थी । डा.के.पी.शाहा लिखते हैं " अगर विष्णुजी हिन्दी के अन्यतम सैनिक है तो इस सैनिक को आगे बढाने वाली देवी है उनकी धर्मपत्नी सुश्री सुशीला जी ।"[६]

प्रभाकर नाम का इतिहास --

विष्णु प्रभाकर जी में प्रभाकर जो शब्द जुडा हुआ है उसका भी एक मनोरंजक इतिहास है । लोगों के मन में यह सवाल पैदा होता है कि उनका नाम प्रभाकर कैसे ? वे जिस काल में पैदा हुए थे वह सुधार का युग था । उस काल में माता-पिता अपने बच्चों के नाम सुन्दर एवं आकर्षक रखते थे । देवी देवताओं के और सतपुरुषों के नाम रखने की परम्परा काफी प्रचलित थी । जन मानस पर आर्य समाज का गहरा प्रभाव था । विष्णुजी को लोग विष्णु दयाल या विष्णु-सिंह नाम से पुकारते । गाँव में प्राइमरी स्कूल में मास्टरजी ने रजिस्टर में उनका

नाम` विष्णुदयाल` लिखा । बाद में मामा के साथ हिसार गये वहाँ बिष्णुजी वैश्य है यह जानकर उन्होंने उनका नाम ` विष्णु गुप्त ` रखा । सरकारी फॅार्म में उन्हें नौकरी मिली वहाँ सम्बन्धित क्लर्क ने उनका नाम` विष्णुदत्त` रजिस्टर में लिख दिया । इसलिए` सर्विस बुक` में विष्णुदत्त यह नाम दर्ज किया गया । यह नाम खुद विष्णुजी को भी पसन्द नहीं था । एक दिन सम्पादक ने कहा कि यह तुम्हारा नाम विष्णु बहुत छोटा है मगर आपने कोई परीक्षा पास की है तो उसे आगे जोड देंगे । विष्णुजी ने ` प्रभाकर` परीक्षा पास की थी । तो सम्पादक ने उनका नाम` विष्णु प्रभाकर` कर दिया । यह नाम विष्णुजी को भी पसन्द आया और उन्होंने उसे हमेशा के लिए रख दिया ।

` प्रभाकर` शब्द को लेकर बहुत कुछ मजे दार घटनाएँ आगे घटित हुयीं । कुछ लोग उन्हें कन्हैयालाल मिश्र` प्रभाकर`, प्रभाकर माचवे और विष्णु प्रभाकर को एकही व्यक्ति मानते रहे । खास तौर पर प्रभाकर माचवे और विष्णु प्रभाकर को लेकर अनेक रोचक रंजक घटनाएँ घटित हुयीं । उन दोनों का एक सम्मिलित नाम चल पडा ` विष्णु प्रभाकर माचवे ` । सम्पादक रूपया भेजना चाहते हैं विष्णु प्रभाकरजी को और मनीऑर्डर पहुँच जाता है प्रभाकर माचवेजी के नाम । विष्णु प्रभाकरजी का ड्रामा रेडियों पर सुनकर श्रोता खुश होते और बधाईयाँ देते हैं प्रभाकर माचवेजी को । सम्मेलन में अध्यक्ष बनाना है,माचवेजी को और निमंत्रण पहुँचता है विष्णु प्रभाकरजी के नाम । कविता छपती है प्रभाकर माचवे जी की और यश मिलता है विष्णु प्रभाकर जी को । इस तरह इस` प्रभाकर` नाम के कारण कुछ सुखद अनुभव हुए और दु:खद भी ।` प्रभाकर` नाम के कारण उन्हें महाराष्ट्रीय ब्राह्मण समझा गया । गुप्तचर विभाग के लोग इनका पीछा करते रहे । ऐसे ऐतिहासिक नाम को विष्णुजी कैसे छोड सकते ।

साहित्य सेवा —

विष्णुजी सबसे निराले साहित्यकार हैं । गाँधीजी से भी उन्होंने प्रेरणा ली । साहित्य में उनको गांधीवाद का प्रवक्ता कहा जाता है ।गाँधीजी ने दूसरे के

लिए जीवन जीने की सीख दी । विष्णुजी का विश्वास है, यदि लोग इस पर चल सके तो बहुत-सी समस्याएँ अपने आप सुलझ जाएगी । सन १९२७-२८ के आस पास विष्णु प्रभाकर जी का परिचय सभी साहित्य से ` डास्तवायस्की के उपन्यास ` पवित्र पापी` द्वारा हुआ । सभी साहित्य के सिवा बंगाल के प्रसिध्द जाने माने कहानी एवं उपन्यास कार शरद चन्द्रजी का विष्णुजी पर गहरा प्रभाव है । ऐसा लगता है शरत् की तलाश एवं खोज करते करते हिन्दी साहित्य को संजोग से और एक शरत् मिल गया । विष्णु प्रभाकरजी की प्रेरणा का मूल स्त्रोत है जीवन । वे खुली आँखों से जीवन की ओर अनोखी अदा से देखते हैं । उनका संघर्षमय जीवन ही उनका प्रेरणा स्त्रोत है ।` जियो और जीने दो ` यह उनका सिध्दान्त है । इसी सत्य के बलपर वे जिन्दगी के रास्ते पर नयी उमंग से आगे बढ रहे हैं । वे जीवन के दर्शक हैं, आलोचक नहीं। विष्णुजी का पूरा साहित्य मानवता एवं इन्सानियत से आलोकित है । रेडियो भी इनका प्रेरणा का स्त्रोत रहा है । विजयेन्द्र स्नातक विष्णु प्रभाकर जी को सौम्य साहित्य साधक मानते हैं । उनकी जब विष्णुजी से पहली बार मुलाकात हुयी तोउन्हें ऐसा लगा," मैंने पहली बार जब विष्णुजी को देखा । (विष्णु को देखना नहीं होता विष्णु के दर्शन होते हैं) तो वे लकदकविहीन खादी के शुभ्र वस्त्रों में अत्यन्त सहज मुद्रा में मित्रों का पारस्परिक परिचय करा रहे थे । मुख पर गौर वर्ण की दीप्ति और आँखों में चमक होने पर भी प्रभावित या आतंकित करने जैसी कोई भंगिमा उनके पास न थी ।[7]

विजयेन्द्र स्नातक को ऐसा लगा कि साक्षात् विष्णुजी विष्णु के अवतार हैं। वे उनसे प्रभावित हुए । विष्णुजी के बारे में वे कहते हैं," कलम स्वालम्बन का मूर्त और अमूर्त दोनों रूपों में प्रतिनिधित्व करती है । कलम पुरूषार्थ का प्रतीक भी है और स्वावलम्बन का बिम्ब भी। विष्णुजी पुरूषार्थ और स्वावलम्बन के साक्षात मूर्तरूप हैं। उनकी साठ पुस्तकें उनके अमूर्त अध्ययन और अध्यवसाय की मूर्त-प्रतिमाएँ हैं । विष्णुजी ने जब कलम पकडी थी तब प्रेमचन्द और शरद्चन्द्र जैसे कथाशिल्पी ही उनके पथ-प्रदर्शक थे । ज्यों - ज्यों पथ प्रशस्त होता गया,साहित्य की अन्य विधाएँ भी उनके रचना संसार में समाविष्ट होती

गई और आज कहानी, उपन्यास, नाटक, एकांकी, रेखाचित्र, संस्मरण, निबन्ध, यात्रावृत्त, बाल साहित्य आदि विधाओं में उनका प्रदेय लक्षित किया जा सकता है।*८

विष्णुजी की लेखनी हमेशा यथार्थ से जुडी रहती है। बडी कुशलतासे पात्रों का आदर्शमयी, चरित्र-चित्रण किया है।* विष्णुजी का साहित्य मानवीय प्रकृति से धुल मिल गया है। व्यक्तित्व की तलाश उसमें आसानी से की जा सकती है। व्यक्ति हमेशा अपनी रचना में नहीं तो और कही होगा ? स्त्रष्टा सदा अपनी सृष्टि में ही ओत-प्रोत रहता है।*

विष्णुजी के बारे में शशिप्रभा शास्त्री कहती हैं* विष्णु प्रभाकर जी को मैं जानती ही कहाँ हूँ। कहते हैं, व्यक्ति अपनी रचनाओंसे पहचाना जाता है - कितना कुछ लिखा है, उन्होंने, अभी सब पढने का मौका ही कहाँ मिला है, जो कुछ पढा है, उसे गुनने का समय नहीं मिल पाया है। पात्रों के माध्यम से मापने का प्रयत्न किया है - घुमक्कडी वृत्ति वाले उनके भावुक-उदार-सात्त्विक मन को - पर कितना मुश्किल है, व्यक्ति के मन को नापना-आप कुछ अनुमान लगा - पा सक रहे हैं न।*९

कु. इन्दिरा विष्णुजी के बारे में कहती है,* जीवन में जिसने अनैतिकता से नैतिकता में भी सौन्दर्य बोध ढूंढा। जो न्याय अन्याय सब की उपेक्षा कर कृतज्ञता एवं सहजता का पोषण करता रहा। जिसने उपभोग के ऐश्वर्य को जाना-समझा लेकिन उसकी प्राप्ति के लिए अपने को बन्धक नहीं रक्खा। जिसने विश्वास का आसन कभी नहीं छोडा, गांधी युग की विचार-धारा को सहजने वाला सामान्य... इन्सान।*१०

विष्णुजी ने लगभग २५० कहानियाँ लिखी। कुछ कहानियाँ छप गयी। कुछ खो गयी। सन १९३८ में उनकी शादी हुयी। शादी मेंसुप्रसिध्द साहित्यकार शरीक, प्रभाकर माचवे, जैनेन्द्र आदि आए थे। माचवे जी ने विष्णुजी से कहा कि तुम्हारी कथा में संवाद बहुत अच्छे हैं, प्रभावशाली हैं। तुम एकांकी क्यों नहीं लिखते ? इसी प्रेरणा स्वरुप विष्णुजी ने 'हत्या के बाद', एकांकी लिखी। बाद में यह 'क्रांति नाम से' 'पारिजात' मासिक में छप गयी। 'साहित्य सन्देश' में उस साल का सर्व श्रेष्ठ एकांकी माना गया।

विष्णु जी का प्रकाशित कहानी साहित्य --

कहानी - साहित्य --

विष्णु प्रभाकर जी ने सर्व प्रथम कहानियाँ लिखीं है। उनका प्रथम कहानी संग्रह' आदि और अन्त' सन १९४५ में प्रकाशित हुआ।' रहमान का बेटा' सन १९४७ ,' जिन्दगी के थपेडे' सन १९५२,' संघर्ष के बाद' सन १९५३,' धरती अब भी घूम रही है' सन १९५९,' सफर के साथी' सन १९६०,' खण्डित पूजा' सन १९६०,' साँचे और कला' सन १९६२,' मेरी तैंतीस कहानियाँ' सन १९६७,' मेरी प्रिय कहानियाँ' सन १९७७,' पुल टूटने से पहले' सन १९७७,' मेरा वतन' सन १९८० ' खिलौने' सन १९८१,' मेरी लोकप्रिय कहानियाँ' सन १९८१,' इक्यावन कहानियाँ' सन १९८३,' मेरी कहानियाँ' सन १९८४,' मेरी कथा यात्रा' सन १९८४,' एक और कुन्ती' सन १९८५,' जिन्दगी एक रिहर्सल' सन १९८६,' एक आसमान के नीचे' सन १९८९ आदि कहानी संग्रह आपने लिखे है। विष्णु प्रभाकर बहुमुखी प्रतिभा के धनी साहित्यकार है। वरिष्ठ लेखक श्री विष्णु प्रभाकर ने यद्यपि नाटककार ,कहानीकार, उपन्यासकार,जीवनीकार तथा विचारक के रूप में ख्याति अर्जित की है। लेकिन वे स्वयं को कहानीकार ही मानते हैं।" पूरी विनम्रता के साथ मेरी मान्यता यही है कि मैं जैसा भी हूँ, अच्छा या बुरा छोटा या बडा सबसे पहले कहानीकार हूँ" साहित्य की हर एक विधा को उन्होंने दिलचस्पी से अपनाया। लेकिन वे सबसे पहले खुद को कहानीकार ही मानते हैं। इनके कहानियों की सबसे बडी विशेषता है कि जीवन के प्रति गहरी अन्तर्दृष्टि और उसकी अत्यन्त सहज प्रस्तुति। पते की बात यह है कि उनकी कहानियाँ जिन्दगी के अहम सवालों से सीधे टकराती है। उन समस्याओं का समाधान वे संकेतित करती है।लेकिन उनमें खोखले आदर्श का प्रदर्शन तनिक भी नजर नहीं आता। अपनी कहानियों के बारे में वे स्वयं लिखते हैं" मैं यथार्थ को स्वीकार करता हूँ। समाज सापेक्ष होकर उससे बचा नहीं जा सकता। आदर्शों का बोझ मुझपर है लेकिन रूढियों की स्थापना या उनमें विश्वास करना आदर्श का पर्याय नहीं है। आदर्श मेरे लिए इतना ही है कि मैं जो कुछ चाहता हूँ उसको रूप दे सकू।" [११]

' धरती अब भी घूम रही है' विष्णु प्रभाकर जी की कदाचित सर्वाधिक प्रसिध्द कहानी है। उसमें उन्होंने बडी कुशलता से बच्चों की मासूमियत के जरिए समाज की भ्रष्ट व्यवस्था, द्वेष के अन्धे कानून पर कटु प्रहार किया है। समकालिन कथा लेखन में उनकी कहानियों का अपना अलग अलग विशिष्ट स्थान है।' पुष्पपाल सिंह लिखते हैं ' उनकी सुदीर्घ लेखन यात्रा में विभिन्न पडावों से गुजरती हुई उनकी कहानियाँ कभी भी सन्दर्भच्युत नहीं हुई हैं। सदैव प्रासंगिक बने रहना किसी भी कलाकार की सफलता का बहुत बडा रहस्य है।'[१२] विष्णु प्रभाकर जी मूल रूप से सुकोमल भावनाओं के चितेरे कथाकार हैं। आपकी कृपा है और कौन जीता कौन हारा' यह उनके लघु कथा संग्रह है। भावनाओंका अंकन करते समय दिलो जान से वे भावुक्ता में डूब जाते हैं। इसलिए उनकी कहानियाँ हृदयस्पर्शी होती हैं। उनकी कहानियोंका क्षेत्र बडा व्यापक है इसकी वजह यह है कि उनके पास मानव मन की सुकोमल भावनाओं तक पहुँचने की क्षामता है। जिन्दगी का बहुत बडा फलक उन्होंने कहानियों में अनोखी अदा से पेश किया है। जीवन की अनेक समस्याओं को इनमें उभारा है। उनके पात्र पाठक के मानस पर अमिट छाप छोड जाते हैं। उनकी हिन्दु-मुस्लिम समस्या पर आधारित कहानियाँ हमें आकर्षित करती हैं। ये कहानियाँ देश और जगत के संदर्भ में आज भी प्रासंगिक हैं। हम उन समस्याओं का सामना कर रहे हैं।

विष्णु जी ने कहानी, एकांकी, नाटक, उपन्यास आदि विधाओं के साथ-साथ जीवन, संस्मरण, स्केच, रिपोर्ताज, और यात्रा वर्णन को ही बडी सफलता से लिखा है। देश-विदेश की यात्रा करने के कारण वहाँ की संस्कृति को आपने नजदीकसे देखा है। संगीत और प्रकृति का मनोहारी रूप हमेशा उन्हें आकर्षित करता रहा। विष्णु प्रभाकर के पैरों में गति है। वाणी में मिठास है। मानव जीवन का यथार्थ पूर्ण चित्रण, मनोवैज्ञानिक विश्लेषण, भावनाओं का परिपाक और शाश्वत मानवी मूल्यों का उद्घाटन विष्णु प्रभाकरजी के साहित्य की विशेषताएँ है।

पुरस्कार - सम्मान --

विष्णु प्रभाकर के मन में साहित्य के प्रति रूचि बचपन से ही थी । जो भी किताबें मिलती उसे वे पढते थे । जब वे आठवीं कक्षा में पढते थे तभी उनकी चिठ्ठी 'बालसखा' में प्रकाशित हो चुकी । उनकी पहली कहानी सन १९३१ के अन्त में लिखी गयी । विष्णुजी ने सन १९३९ में एक एकांकी नाटक लिखा, जिसका नाम था 'हत्या के बाद' । कला की दृष्टि से वह दुर्बल था, यद्यपि कथावस्तु सुन्दर थी । वह 'हंस' में प्रकाशित हुआ और 'साहित्य संदेश' में उसे उस मास का सबसे अच्छा एकांकी माना गया । यही विष्णु के साहित्य को मिला हुआ प्रथम पुरस्कार है । इसके बाद विष्णुजी ने साहित्य की अलग अलग विधाओं को अपनी लेखनी से पुष्ट बनाने की चेष्टा की । भारत सरकार द्वारा प्रौढ शिक्षा के लिए रखे गये पुरस्कार निम्नलिखित तीन किताबों को मिले 'हमारे पडोसी', 'बाजी-प्रभु देशपाण्डे' और 'शंकराचार्य' । साथ ही उत्तरप्रदेश सरकार से पाँच पुरस्कार प्राप्त हुए, 'संघर्ष के बाद', 'स्वप्नमयी', 'धरती अब भी घूम रही है', 'कुछ शब्द कुछ रेखायें' और 'आवारा मसीहा' । फरवरी सन १९५३ में 'हिन्दुस्तान टाइम्स' द्वारा आयोजित द्वितीय विश्वहिन्दी कथा स्पर्धा में विष्णु प्रभाकर की कथा 'शरीर से परे' को प्रथम पुरस्कार प्राप्त हुआ । इस स्पर्धा का निर्णय १८ मार्च १९५४ को घोषित किया गया । इस कथा स्पर्धा के लिए ६३९ कथाएँ आयी हुयी थी, उनमें से विष्णुजी की कथा को प्राप्त प्रथम पुरस्कार अभिनंदनीय है । सन १९५१ में आयोजित कथा स्पर्धा में 'गृहस्थी' को चतुर्थ पुरस्कार प्राप्त हुआ था । 'साहित्य कला परिषद' (दिल्ली प्रशासन) के वार्षिक सम्मान समारोह के अन्तर्गत २३ मार्च १९७५ को विष्णु प्रभाकर को सन १९७४-७५ का हिन्दी साहित्य के क्षेत्र में उल्लेखनीय एवं महत्वपूर्ण योगदान के लिए पुरस्कार दिया गया । इस सम्मानार्थ उन्हें वाग्देवी की मूर्ति, एक शाल तथा ११०० रु. नगद दिये गये । २७ अप्रैल १९७५ को भारत की महान विभूतियों के मध्य में जिला मुजफ्फर नगर की महान विभूतियों को 'इन्टरनेशनल ह्यूमेनिस्टस अवार्डस' मिले । इस अवार्ड को पाने वालों में साहित्य जगत के प्रमुख साहित्यकार विष्णुजी ही एक थे । सन १९७४-७५ में 'आवारा मसीहा' इस महत्वपूर्ण कृति को 'पाब्लोनेरूदा सम्मान' मिला ।

विष्णुजी को कृतिकार, हिन्दी पत्रकार संघ, रेडियो कलाकार, हिन्दी साहित्य सम्मेलन आदि दसियों संस्थाओं की ओर से फूलमालाएँ अर्पित की गईं। अनेक महान लेखकों ने उनके बारे में स्नेह भरे उद्‌गार प्रकट किये। विष्णुजी का व्यक्तित्व, साहित्य और चरित्र उच्च कोटि के कलाकार का है। जीवन में वे जितने सीधे-साधे, सुलझे विचारोंवाले और विनम्र हैं, साहित्य में भी उतने ही संतुलित, स्पष्ट और स्वतंत्र विचारधारा के व्यक्ति है ? सचमुच विष्णु प्रभाकर जी एक महान विद्वान ही लगते हैं।

शौक --

विश्व भ्रमण पैदल करने की बडी तीव्र इच्छा विष्णुजी की थी। हिमालय के दुर्गम मार्गों पर लगभग १०० मील पैदल यात्रा करने के अतिरिक्त राजस्थान और हल्दी घाटी के आसपास २५० मील पैदल यात्रा करने के साथ-साथ विष्णुजी और कही पैदल जा नहीं सके। घूमने का, दुनिया को देखने का और प्रत्यक्ष वास्तव जीवन को जानने का शौक बचपन से ही विष्णुजी को है। निसर्ग के सान्निध्य में रहने के कारण प्राकृतिक सौन्दर्य की सहजता उनके साहित्य में दिखाई देती है। वे रूस की यात्रा दो बार कर चुके हैं। इतना देखने के बाद भी बहुत कुछ देखना बाकी है। इसी कारण हमेशा घूमने की सोचते हैं। उन्होंने हमेशा मानव की खोज में तीर्थयात्रा की है। कभी-कभी तो पैदल भाग निकलने को विष्णुजी का जी चाहता है, लेकिन पैरों में पत्थर बन्धे हुए हैं। कुछ वर्ष पूर्व डाक टिकट और सिक्के इकठ्ठा करने का शौक विष्णुजी को था। अब भी डाक टिकटों का उनके पास बडा संग्रह है। लेकिन अब यह काम उनका लडका करता है। सिक्कों के संग्रह की बात बहुत जल्दी समाप्त हो गयी। एक बार एक प्रिय व्यक्ति उनके घर से भागे तो चांदी के रूपयों के साथ पुराने सिक्के भी लेकर भाग गये। मित्रों के साथ पत्रव्यहार करने का शौक विष्णुजी को बहुत बडी मात्रा में है। अपने काम के १-२ घण्टे वे मित्रों के आये हुए खतों के जवाब देने में लगाते हैं। बडे चाव से नये और पुराने, छोटे और बडे सब मित्रों के वाचकों के पत्रों के उत्तर लिखने में उन्हें मानसिक समाधान मिलता है।

संघर्ष --

संघर्ष विष्णुजी के जीवन का स्थायी भाव है। बचपन से लेकर आज तक उनका पूरा जीवन अकथ,अनंत संघर्ष की रोमहर्षक कहानी है। कदम-कदम पर उन्हें संकटों का सामना करना पडा। आर्थिक,सामाजिक,पारिवारिक,राजनीतिक तथा मानसिक स्तर पर याने जीवन की बहुमुखी अवस्थाओंमें वे संघर्ष से गुजरते रहे। उनका जीवन अबोल,मूकसंघर्ष की जिन्दा कहानी है। इस वेदना और व्यथा की कथा को पीछे छोडकर विष्णुजी हमेशा आगे बढ रहे हैं। गांधीजी के शांति और अहिंसा मार्ग के दृढ सैनिक होने के कारण अपने दु:खों की कथा कहाकर वे और किसी को द्रवित करना नहीं चाहते। माँ के प्यार का अभाव ही उनके जीवन का प्रथम संघर्ष है। मानसिक अन्तर्वेदना ही इसकी प्रथम सीढी है। आर्थिक परिस्थिति के कारण शिक्षा छोड कर नौकरी करनी पडी और नौकरी भी उस सरकार की जिसके खिलाफ वे लडना चाहते थे। अन्तर संघर्ष बढने के बाद उन्होंने सरकारी नौकरी का इस्तीफा देकर स्वतंत्र लेखन करने लगे। नौकरी छोडने से आर्थिक संघर्ष तो और भी बढ गया। देहली में आकर नौकरी पकड ली,फिर भी आत्मीक संघर्ष के कारण वे अपने इमान को छोड नहीं सके। अन्त में सब बन्धनों से स्वतंत्र होकर विष्णुजी ने अपना जीवन साहित्य सेवा के लिए अर्पित किया।

विष्णु प्रभाकर के जीवन में अनेक मोह और माया के क्षण आये, लेकिन विष्णुजी इन सब को पार करके साधक की तरह आगे बढते रहे। गांधीवादी विचार धारा के स्वयं सेवक होने के कारण उनके साहित्य और जीवन में एक प्रकार की शुचि-ता, गुरूता और गांभीर्य के दर्शन होते हैं। लिखने पढने के लिए उन्होंने सब कुछ दाँव पर लगाया। बडी बडी लडाइयाँ मोल लीं। कुर्बानियाँ कीं। विष्णु दयाल-विष्णुदत्त - विष्णुगुप्त और विष्णु प्रभाकर उन्होंने इन कई पडावों के माध्यम से कई मंजिलें तय की थीं।

विष्णु प्रभाकर का संघर्षशील तथा अस्थिर जीवन अब कुछ शांत तथा स्थिर बनने जा रहा था कि अचानक उनके जीवन में तूफान उमड आया । विष्णुजी के संघर्षमय जीवन में अपने शांत तथा स्नेहमय प्यार के कारण सँवारनेवाली उनकी गृहलक्ष्मी श्रीमती सुशीला प्रभाकर कॅन्सर की शिकार हो गयी । ४ नवंबर १९७५ को दीपावली के समय ही उनका ऑपरेशन किया गया । इस घटना का जिक्र करते हुए विष्णुजी लिखते हैं कि अब जो है सहना होगा । शांत जीवन में ऐसा तूफान किसी को भी विचलित कर सकता है पर उससे लाभ क्या । दु:ख और पीडा को जीवन का अनिवार्य अंग मानकर ही चलना चाहिए । उस दु:ख में डूबने की अपेक्षा वे ऊपर उठने की चेष्टा करते हैं । वे हिन्दी के ऐसे सत्यनिष्ठ उपासक,जिन्होंने अपने स्वाभिमान को कहीं आँच नहीं आने दी । फिर भी किसी के प्रति कभी आक्रोश जाहीर नहीं किया ।जिसे जीता,अपनी मधुर तर्क संगत वाणी से ही जीता ।

नाटक साहित्य --

विष्णु प्रभाकरजी ने नाटक साहित्य में भी अपनी लेखनी चलाई है,उनमें से प्रकाशित नाटक इस प्रकार हैं ` नव प्रभात ` सन १९५१,` समाधि` सन १९५२, ` चन्द्रहार` सन १९५२,` होरी` सन १९५५,` डाक्टर ` सन १९६१,` युगे-युगे क्रांति` सन १९६९,` टूटते परिवेश` सन १९७४,` कुहासा और किरण` सन १९७५,` टगर` सन १९७७,` बन्दिनी` सन १९७९,` सत्ता के आर पार` सन १९८१,` अब और नहीं` सन १९८१,` गान्धार की भिक्षुणी` सन १९८२,` श्वेतकमल` सन १९८४, आदि है ।

बंगाल के प्रसिध्द साहित्यकार शरत्चंन्द्र चटोपाध्याय की जीवनी ` आवारा मसीहा` हिन्दी साहित्य को अमूल्य निधी है । हिन्दी साहित्य विष्णुजी का सदैव ऋणी रहेगा । विष्णु प्रभाकर जी ` आवारा मसीहा` को अपने जीवन की सबसे बडी उपलब्धि मानते हैं । इस पुस्तक पर उनके करीब २० हजार रू.व्यय हुए हैं । इसे उन्होंने छ: बार लिखा,तब जाकर उसका अंतिम रूप बन पडा है ।` आवारा मसीहा` के निर्माण के पीछे शरतजी के प्रति अपार श्रध्दा उनके दिल में थी । यह विष्णु प्रभाकरजी के त्याग एवं साधना की जिन्दा मिसाल है । सबसे

बढकर वे जपे हुए साधक है । एक साधना की तरह उन्होंने चौदह वर्ष का बनवास स्वयं लिया और आवारा बनकर इन सभी स्थानों की तीर्थ यात्रा की और भूल गये की विष्णु कहाँ है ? कब सोता है ? कब विश्राम करता है ? ऐसी सतत साधना का सुफल हिन्दी साहित्य को एक अनमोल कालजयी अमर कृति 'आवारा मसीहा' के रूप में मिली और आज आवारा मसीहा और विष्णु जैसे एक बन गये हैं । सन १९५६ में इस पर काम शुरु हुआ और सन १९७४ में यह तैयार हुयी ।

विष्णुजी स्वभाव से अबोल तथा एकांत साधक होने के कारण अपने आप में खोये रहते थे । उनकी माँ पढी लिखी होने के साथ-साथ कर्मठ भी थी । बचपन से ही पढने की आदत पड गयी । विष्णुजी ने पढने योग्य हर किताब को पढा । चाहे वह किसी भी देश या धर्म की क्यों न हो । आर्थिक परिस्थिति के कारण वे कॉलेज जा न सके । जो वे नहीं करना चाहते थे,वह उन्हें मजबूरी से करना पडा । राष्ट्र सैनिक होकर प्रत्यक्ष स्वतंत्रता आन्दोलन में हिस्सा लेने की उमंग उनके मन में थी । इसके विपरीत परिस्थिति वश उन्हें अंग्रेज,सरकार की नौकरी करनी पडी । इन सब बातों का घटनाओं का बाल तथा आन्तरिक परिणाम विष्णुजी के भावुक हृदय पर हुआ । मन में विचारों का संघर्ष और भावनाओं का तूफान उठा । मानसिक संघर्ष और द्वन्द्व को प्रकट करने का साहित्य उन्हें प्रमुख तथा महत्वपूर्ण माध्यम मिला । प्राथमिक काल में आर्य समाज का प्रभाव रहा । इस प्रकार उनके निर्माण में एक ओर आर्य समाज का योग है तो दूसरी ओर संघर्ष तथा अभाव का ।

उपन्यास - साहित्य --

विष्णु प्रभाकर जी एक सफल उपन्यासकार भी हैं । उन्होंने कुल मिलाकर पाँच उपन्यास लिखे हैं । 'ढलती रात' सन १९५१,' निशिकांत' सन १९५५, 'तट के बन्धन' सन १९५५,' स्वप्नमयी' सन १९५६, दर्पण का व्यक्ति' सन १९६८, 'परछाई' सन १९६८,' कोई तो' सन १९८० ये कुल मिलाकर सात उपन्यास हैं । लेकिन 'ढलती रात' का संशोधित रूप ही 'निशिकांत' है ।' दर्पण का व्यक्ति' और 'पर छाई' एक ही उपन्यास के दो नाम हैं । तात्विक दृष्टि से पूरी तरह से

` उपन्यास` मानी जा सकने वाली पुस्तकें तो तीन ही हैं। विष्णुजी आधुनिक साहित्यकारों में सबसे ज्यादा आधुनिक लगते हैं। वे तो हिन्दी के ख्याति प्राप्त कथा मनिषी हैं। हिन्दु-मुस्लिम समस्या साथ ही साथ जाँति-पाँति की समस्या को उन्होंने ` निशिकांत` में उठाया है। नारी जीवन से सम्बन्धित जो प्रश्न ` निशिकांत` में पाया वे अछूते रह गये थे,उन्हें विष्णुजी ने` तट के बन्धन` में ज्यादा स्वच्छन्दता एवं तीखेपन से उभारा और उठाया है। उनकी कृति` स्वप्नमयी` में एक नारी के घर के भीतर और बाहर के कार्य क्षेत्रों से उत्पन्न स्थिति और संघर्ष को लेकर लिखी गयी एक लम्बी एवं दर्दभरी कहानी है जो आज की नारी की आन्तरिक बेचैनी को रेखांकित करती है। ` दर्पण का व्यक्ति` इस उपन्यास में पुरुष प्रधान समाज में नारी की निम्न स्तर स्थिति,विधवा विवाह,सुहाग की विडम्बना,विवाहविच्छेद आदि अनेक समस्याओं पर विचार किया गया है।` कोई तो` इस उपन्यास में मध्यवर्ग की यौन नैतिकता के प्रश्न को उठाया है। यह नारी प्रधान उपन्यास है। गोविन्द प्रसाद का कहना है ` कुछ मिलाकर सामाजिक उपन्यासों की कोटि में ` कोई तो ` मील के पत्थर की तरह जिसने निम्नवर्ग को परम्परागत दया का पात्र न बनाकर उसे अपने पैरों पर खड़ा कर दिया है। विष्णु प्रभाकर जी के गहन मनन चिन्तन का यह फल है। कथानक संपन्नता और पठनीयता उनकी सबसे बड़ी विशेषताएँ हैं। वे हिन्दी के जाने-माने सफल उपन्यासकार माने जाते हैं।

जीवन-संस्मरण-साहित्य --

हिन्दी साहित्य आत्म कथनों और जीवनियों की दृष्टि से विपन्न साहित्य है। विष्णु प्रभाकर जी ने जीवनी संस्मरण भी बड़ी कड़ी साधना से लिखे हैं।` जाने अनजाने` सन १९६१,` कुछ शब्द कुछ रेखाएँ` सन १९६५,` आवारा मसीहा` सन १९७४,` अमर शहीद भगतसिंह` सन १९७६,` सरदार वल्लभ भाई पटेल` सन १९७६,` यादों की तीर्थ यात्रा` सन १९८१,` शुचिस्मिता` सन १९८२, (सम्पादित),` मेरे अग्रज मेरे मीत` सन १९८३,` समान्तर रेखाएँ` सन १९८४, ` हम उनके ऋणी हैं ` सन १९८४,` शरच्चन्द्र` सन १९५९,` बंकिमचन्द्र` सन १९६८

आदि विष्णुजी के जीवनी संस्मरण प्रकाशित हुए हैं। `आवारा मसीहा` हिन्दी जीवनी साहित्य की एक अमर रचना है। `आवारा मसीहा` हिन्दी का वह गौरव ग्रन्थ है जिसका महत्व निर्विवाद है और जिसने हिन्दी के जीवनी साहित्य को एक अभिनव गरिमा प्रदान की है। विजयेन्द्र स्नातक कहते हैं, " विष्णुजी की अक्षय कीर्ति का स्तंभ है उनकी अमर कृति `आवारा मसीहा` हिन्दी के जीवनी साहित्य की यह मूर्धन्य कोटि की रचना है। कहना न होगा कि जीवनी लेखन का यह मानदण्ड है। भारत की किसी अन्य भाषा में भी ऐसी प्राणवन्त, प्रामाणिक और प्रेरणाप्रद जीवनी उपलब्ध नहीं है।" [१३]

एकांकी - साहित्य --

कई बार यह तय कर पाना मुश्किल होता है कि विष्णुजी को किस विधा का सिध्दहस्त कलाकार माना जाएँ। विष्णुजी नाटक और रंगमंच के साथ जुडे रहे हैं। एक अभिनेता और लेखक के रूप में। लेकिन उन्होंने पूर्ण नाटकों की अपेक्षा अधिक `एकांकी नाटक` लिखे हैं। कुछ लोगों का विचार यह है कि विष्णुजी जितने सफल एकांकीकार हैं उतने नाटककार के रूप में वे सफल नहीं हुए। लेकिन कुछ भी हो, वे एक सफल एकांकीकार हैं। उनका पहला एकांकी संग्रह `इन्सान और अन्य एकांकी` सन १९४७ में प्रकाशित हुआ। उसके बाद `अशोक और अन्य एकांकी` सन १९५६, `प्रकाश और परछाईं` सन १९५६, `बारह एकांकी` सन १९५८, `दस बजे रात` सन १९५९, `ये रेखायें ये दायरे` सन १९६३, `ऊँचा पर्वत गहरा सागर` सन १९६६, `मेरे प्रिय एकांकी` सन १९७०, `मेरे श्रेष्ठ रंग एकांकी` सन १९७१, `तीसरा आदमी` सन १९७४, `नये एकांकी` सन १९७६, `डरे हुए लोग` सन १९७८, `मैं भी मानव हूँ` सन १९८२, `दृष्टि की खोज` सन १९८३, `मैं तुम्हें क्षमा करूँगा` सन १९८६, आदि एकांकी संग्रह प्रकाशित हुए हैं। कुछ एकांकियों में विष्णुजी ने दृश्य संकेत भी दिये हैं। उन्होंने एक रूपक संग्रह लिखा है जिसका नाम `स्वाधीनता संग्राम` है। उनके अनूदित नाटक `एक लिंकन` सन १९६२, और `विद्रोह` सन १९६२ ये दो हैं। सन १९५० रेडियो रूपक में कलात्मक प्रयोग के लिए

विष्णुजी का नाम सदा स्मरणीय रहेगा । इस संदर्भ में सर्वोदय, स्वाधीनता संग्राम, नया काश्मीर, पंचायत आदि बहुत प्रसिध्द हैं । रेडियो रूपान्तर करने में भी विष्णुजी ने अपनी मौलिकता का अच्छा परिचय दिया है । संक्षेप में स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद हिन्दी में जिन नाटककारों ने नाटक की सर्वाधिक विधाओं के प्रयोग द्वारा यश अर्जित किया उनमें विष्णुजी प्रमुख हैं । विष्णुजी के कुछ एकांकी नाटकों में एक बात महत्वपूर्ण है और वह है पीढियों का संघर्ष या अन्तर । वे एक सजगरचनाकार हैं । नाटककार विष्णुजी के दिल में नारी के प्रति श्रध्दा है । नारी का आदर्श रूप एकांकी के जरिए उन्होंने पेश किया है । उन्होंने हिन्दी नाटक को रंगमंच, रेडियो और टेलिविजन पर लोकप्रिय बनाया है। उनके नाटक और एकांकी इस बात के साक्षी हैं कि उनका मन कथा साहित्य की अपेक्षा नाटक में अधिक रमा है ।

वैचारिक साहित्य --

विष्णुजी ने वैचारिक निबन्ध भी लिखे । उनकी संख्या दो है । उनके नाम `जन समाज और संस्कृति : एक समग्रदृष्टि ` सन १९८१ और `क्या खोया क्या पाया` सन १९८२, विष्णुजी सफर के शौकिन हैं। हिमालय की हसीन-वादियों में उन्हें घूमने का शौक है । उन्होंने सभी तीर्थ स्थानों की यात्राएँ की हैं। समुद्र से भी उन्हें उतना ही प्यार है उन्होंने लगभग सारा भारत घूम लिया है । वे विदेश में भी दो बार १९६२, १९७६ में रूस गये थे । इसके अतिरिक्त नेपाल, बर्मा, कम्बोडिया, वियतनाम, सिंगापुर, मलाया और मारिशस आदि स्थानों का भी उन्होंने भ्रमण किया है । उन्होंने यात्रा वृत्त भी दिलचस्पी से लिखे हैं । `जमुना गंगाके नैहर में १९६४,` अभियान और यात्राएँ (सम्पादित) १९६४, `हंसते निर्झर दहकती मट्टी` सन १९६६,` ज्योतिपुंज हिमालय` सन १९८२, इस तरह उन्होंने चार यात्रा वृत्तान्त लिखे हैं । गंगा की गाथा भारत की गाथा है । गंगा भारत है । भारत गंगा है । प्रकृति परिवेश के साथ उन्हें बचपन से लगाव था । लेखक ने यात्रावृत्त में अपने धार्मिक, सामाजिक, सांस्कृतिक, भौगोलिक विचार जगह-जगह प्रक्षोपित किये हैं ।

बाल-साहित्य --

विष्णु प्रभाकर जीने बाल साहित्य भी लिखा है। बाबू गजनन्दन लाल को जरूर जानते हैं। बचपन से लेकर बुढापे तक उन्होंने अनेक कारनामें किये। उनके कारनामें सुनकर नन्हें-मुन्हें मासूम बच्चों का हँसते हँसते बुरा हाल हो जाता है। बच्चों के प्रिय इस गजनन्दन बाबू का जन्म विष्णुजी की लेखन से हुआ है। हिन्दी में बाल साहित्य को नयी दिशा देकर उन्हें समृध्द बनाने और बच्चों तक पहुँचाने में जिन लेखकोंने सफलता प्राप्त की है, उन लेखकों में विष्णुजी का नाम विशेष उल्लेखनीय है। उनके बाल साहित्य के बारेमें हरिकृष्ण देवसरे कहते हैं हिन्दी के जिन स्वनामधन्य वरिष्ठ लेखकोंने बाल साहित्य रचना को सही अर्थों में समझा है और उसे उचित महत्व दिया है, उनमें केवल विष्णु प्रभाकर ही ऐसे हैं जिन्होंने इस विधा को आधुनिक जीवन मूल्यों और परिवेश के संदर्भ में प्रस्तुत किया है।[१४] विष्णुजी नवबाल साहित्य के दिशा दर्शक हैं। विष्णुजी ने बच्चों के लिए कथाएँ लिखी हैं, नाटक लिखे हैं और यात्रा कथाएँ भी लिखी है। इन सभी रचना के पीछे उनकी एक निश्चित दृष्टि रही है जो उनके रचनात्मक बाल साहित्य को मौलिक धरातल पर प्रदान करती है। उन्होंने आज तक कुल मिलाकर ग्यारह बाल नाटक व एकांकी संग्रह ,दो जीवनियाँ (बाल) बारह बाल कथा संग्रह लिखे हैं। उनका ब्योरा निम्न प्रकार है --

बाल नाट्य साहित्य ` मोटेलाला` सन १९५५,` रामू की होली` सन १९५९, ` दादा की कचहरी` सन १९५९,` कुन्ती के बेटे` सन १९५८,` अभिनव एकांकी` सन १९६८, अभिनय एकांकी` सन १९६९,` हडताल` सन १९७२,` नूतनबाल एकांकी` सन १९७५,` ऐसे ऐसे` सन १९७८,` बालवर्षा जिन्दाबाद` सन १९८१ , आदि विष्णुजी ने बाल-साहित्य का निर्माण किया है।

कथा - साहित्य --

विष्णु जी के प्रकाशित कथा - साहित्य ` सरल पंचतंत्र ` सन १९५५, ` जब दीदी भूत बनी` सन १९६०,` जीवन पराग` सन १९६३,` स्वराज की कहानी`

सन १९७१,' घमण्ड का फल' सन १९७३,' हीरे की पहचान' सन १९७६, 'मोतियों की खेती' सन १९७६,' पाप का घड़ा' सन १९७६,' तपोवन की कहानियाँ' सन १९७६,' गुड़िया खो गयी' सन १९७७ आदि विष्णुजी ने कथाएँ लिखी हैं।

विष्णुजी के बाल साहित्य के बारे में हरिकृष्ण देवसरे कहते हैं --
" विष्णुजी ने अपने बाल साहित्य में इन विचारों को अभिव्यक्ति दी है और स्पष्ट किया है कि बच्चों की वास्तविक माँग क्या है? वे उपदेश के विरोधी हैं, नीति की घुट्टी नहीं पिलाना चाहते, किन्तु ऐसा बाल साहित्य अवश्य देना चाहते हैं जो बच्चों को तर्कशील,विवेकशील और नये परिवेश को समझाने योग्य बनाएँ।"[25] विष्णुजी बड़ों के प्रति जितने समर्पित हैं उतने ही बच्चों के प्रति भी हैं। बाल साहित्य विकास में उनके विचारों ने हमेशा प्रेरणा दी है।

निष्कर्ष

उपर्युक्त विवेचन के आधार पर निष्कर्षत: यह कहा जा सकता है कि विष्णु प्रभाकर जी एक संस्कार सम्पन्न व्यक्तित्व हैं जिसमें भारतीय संस्कृति के प्रति अटूट आस्था और मानवता के प्रति चिरंतन विश्वास है। 'प्रभाकर' नाम का इतिहास उनके व्यक्तित्व में एक अनुपम उपलब्धि है। उनके साहित्यिक व्यक्तित्व में बाह्य प्रेरणा की अपेक्षा आन्तरिक प्रेरणा ही सर्व प्रमुख है जिसमें उनकी लेखकीय स्वायत्तता एवं अस्मिता के दर्शन होते हैं। विष्णु प्रभाकर जी एक बहुमुखी और प्रतिभा सम्पन्न साहित्यकार हैं। लेकिन वे कहानीकार जीवनीकार,एकांकीकार,नाटककार तथा बाल साहित्यकार के नाम से बहुत प्रसिध्द हैं।

विष्णु प्रभाकर जी अपने विशिष्ट व्यक्तित्व और मौलिक कृतित्व की वजह से अनेक मान-सम्मानों से विभूषित हैं। सामाजिक जीवन के भिन्न - भिन्न रूपों की व्याख्या,प्रेम के भिन्न - भिन्न पक्ष,व्यक्ति तथा समाज की आलोचना,उनका दु:ख - दर्द,गंभीरता तथा हास्य और व्यंग्य उनके समग्र साहित्य के विषय है। विष्णुजी ने अपनी लेखनी हर क्षेत्र में चलाई है और उसमें उन्हें प्रेरणा ही मिलती रही। विष्णु प्रभाकरजी का हिन्दी साहित्य के विकास में सम्माननीय स्थान है।

ग्रन्थ सूची

१ डा. वीरेन्द्र सक्सेना ' आवारा मनुष्य-विष्णु प्रभाकर ' पृ.१५

२ डा.महीप सिंह संपा. विष्णुप्रभाकर व्यक्ति और साहित्य , पृ.१२-१३

३ डा.महीप सिंह संपा. विष्णु प्रभाकर व्यक्ति और साहित्य ,पृ.१८
(विष्णु प्रभाकर का लेख मैं मेरा समय और रचना प्रक्रिया)

४ वही पृ.२१

५ वही पृ.१९

६ डा.के.पी.शाह विष्णु प्रभाकर के साहित्य का अनुशीलन पृ.२२-२३

७ डा.महीम सिंह - संपा. विष्णु प्रभाकर व्यक्ति और साहित्य
(डा.महीप सिंह का लेख लेखकिय स्वायत्तता का प्रेरक बिंदू) पृ.१०

८ वही
(विजयेन्द्र स्नातक का लेख साम्य साहित्य साधक) पृ.१९

९ वही
(शशिप्रभा शास्त्री का लेख - परिचय के धूप-छायी रंग) पृ.१००

१० वही
(कु.इंदिरा का लेख - विष्णु प्रभाकर का लेख -एक व्यक्ति) पृ.१०१

११ वही
(हेतु भारद्वाज का लेख सुधारवाद से भावुक यथार्थवाद तक) पृ.१३९-१४०

१२ वही
(पुष्प पाल सिंह का लेख धरती पर जीवन के इर्द,गिर्द घुमती
कहानिया) पृ.१४४

१३ वही
(विजयेन्द्र स्नातक का लेख - साम्य साहित्य साधक पृ.१५

१४ वही
(हरिकृष्णा देवसरे का लेख - नवबाल साहित्य के दिशा दर्शक) पृ.२१४

१५ वही
(हरिकृष्णा देवसरे का लेख -- नव बाल साहित्य के दिशा दर्शक)पृ.२१६